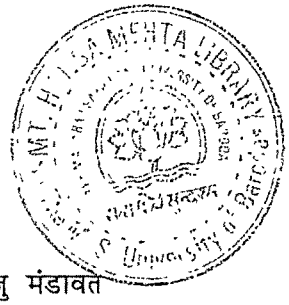

Introduction

भूमिका

SMT. H. S. MEHTA LIBRARY

रोहतक से एम.ए. करने के बाद कुछ समय मै अपनी दीदी डॉ0 अंजु मंडावत के पास दिल्ली रही और उनसे समय-समय पर साहित्य चर्चाएँ करती रहीं। हिन्दी साहित्य में गहन अध्ययन और शोध करने की मेरी जिज्ञासा बढ़ती गई। संयोग से मेरे भाई का निवास जब अहमदाबाद हुआ और मेरा आना-जाना गुजरात में होने लगा तो मैंने बड़ौदा आकर यहाँ म.स. युनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग से सम्पर्क बनाया और डॉ0 विष्णु विराट से अपने विषय पर विचार-विमर्श किया। अन्त में तय किया गया कि गुजरात में रचित हिन्दी साहित्य पर ही नये दृष्टिकोण से शोधकार्य सम्पन्न किया जाए। डॉ0 विष्णु विराट गुजरात के सम्माननीय हिन्दी साहित्यकार हैं, आपका सम्पर्क भी समग्र गुजरात के विद्वान समाज से है, अत: इनकी छत्रछाया में ही मैंने 'गुजरात की हिन्दी काव्य-परम्परा और प्रयोग' विषय निश्चित करके अपना विषय पीएच.डी. हेतु पंजीकृत करा लिया।

विषय निर्धारित हो जाने के बाद इसी विषय पर अध्ययन करने के लिए मैंने यहाँ के अनेक विद्वानों से सम्पर्क किया। अनेक प्रकाशित बहुचर्चित ग्रंथों का अवलोकन किया। यहाँ के हिन्दी विद्वानों में डॉ0 रमणलाल पाठक, डॉ0 दयाशंकर शुक्ल, डॉ0 मदनगोपाल गुप्त, डॉ0 के.एम. शाह, डॉ0 रमण भाई तलाटी आदि उल्लेखनीय हैं। मैंने उनके कृतित्व को जाना और समझा और अपना आगे का मार्ग निर्धारित किया।

मैंने सामान्य रूप से गुजरात के हिन्दी साहित्य का अध्ययन-मनन प्रारंभ कर दिया। इसके लिए गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी, गाँधीनगर से; हिन्दी साहित्य परिषद, अहमदाबाद से; गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा, बड़ौदा से; प्राच्य विद्यापीठ, बड़ौदा से तथा म.स. युनिवर्सिटी, बड़ौदा के ग्रंथागारों से मैंने अनेक दुर्लभ ग्रंथ प्राप्त किये तथा अपना विधिवत अध्ययन प्रारंभ कर दिया।

गुजरात के हिन्दी साहित्य पर अनेक कोणों से विद्वानों ने विचार व्यक्त किये है, यहाँ अनेक शोधकार्य भी सम्पन्न हुए हैं, इन प्रख्यात विद्वानों में प्रो. अम्बाशंकर नागर, डॉ0 किशोर काबरा, डॉ0 भगवानदास जैन, डॉ0 रामकुमार गुप्त, डॉ0 भूपतिराम सांकरिया, डॉ0 सनतकुमार व्यास, डॉ0 भगवतशरण अग्रवाल, आचार्य रघुनाथ भट्ट, डॉ0 निर्मला आसनानी, डॉ0 शशि अरोरा आदि के शोध प्रदान विशेष उपयोगी सिद्ध हुए हैं। मैंने गुजरात के अनेक ग्रंथागारों का भी अवलोकन करना प्रारंभ कर दिया और धीरे-धीरे गुजरात के हिन्दी साहित्य की मूल प्रकृति में मेरी अभिरुचि जागृत होने लगी।

विषय पंजीकृत हो जाने के बाद मैंने सामग्री चयन करना प्रारंभ कर दिया और अपना लेखन-कार्य में भी बढ़ने लगी और फिर धीरे-धीरे मैंने अपने निर्देशक महोदय के कुशल निर्देशन में यह शोधकार्य सम्पन्न किया।

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को मैंने मुख्य सात अध्यायों में विभाजित किया है जिससे विषय को व्यवस्थित रूप से विश्लेषित किया जा सके। विषयगत अध्यायों का संक्षिप्त विभाजन इस प्रकार है:-

अध्याय एक गुजरात में हिन्दी-प्रचार की भूमिका से सम्बन्धित है। गुजरात एक अहिन्दीभाषी राज्य है लेकिन हिन्दी की जड़े यहाँ बहुत पहले से जमी हुई हैं। नरसी महेता, दयाराम, अखा आदि ने यहाँ हिन्दी-काव्य की जड़े जमाई थीं। इस अध्याय में राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होकर हिन्दी का जो व्यापक प्रसार हुआ है, उस पर चतुर्दिक प्रकाश डाला गया है। व्यापारियों के सतत सम्पर्क और महाजनों के सम्बन्ध के कारण भी हिन्दी-क्षेत्र की बोलियाँ यहाँ पाँव पसार सकी है। अनेक संत-महात्माओं, सिद्धों एवं धर्माचार्यों ने भी यहाँ हिन्दी के लिए एक अनुकूल परिस्थिति का निर्माण किया है। पुष्टिमार्गीय वैष्णव सम्प्रदाय का यहाँ हिन्दी साहित्य के प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके अतिरिक्त जैन, बौद्ध, स्वामीनारायण, राधावल्लभ, रामानंदी, प्रणामी आदि अनेक धर्म-सम्प्रदायों का साहित्य भी यहाँ उपलब्ध है, यहाँ के ग्रंथागारों में हस्तलिखित पांडुलिपियों के रूप में भी हिन्दी का पुष्कल मध्यकालीन साहित्य उपलब्ध हुआ है। इन सबका विवरणात्मक विश्लेषण इस अध्याय एक में किया गया है।

अध्याय दो में गुजरात में हिन्दी काव्य-परम्परा का क्रमिक विकास स्पष्ट करने के लिए यहाँ के हिन्दी-प्रचारकों का भी लेखा-जोखा प्रस्तुत करके उनकी महत्ता ज्ञापित की गई है। इस संदर्भ में महर्षि दयानन्द, महात्मा गाँधी, काका कालेलकर, के.एम. मुंशी, महाराजा सयाजीराव आदि के विशिष्ट प्रदान की चर्चा की गई है।

अध्याय तीन में हिन्दी-साहित्य के प्रसार एवं प्रचार में धर्म सम्प्रदायों की भूमिका स्पष्ट करते हुए उनको विशिष्ट योगदान को रेखांकित किया गया है। इनमें स्वामीनारायण के अष्टछापी कवि तथा प्रणामी सम्प्रदाय के अनुयायीगणों का प्रदान तथा विशेष रूप से जैन धर्मावलम्बियों के योगदान को स्पष्ट किया गया है। रामानन्द, रविभाण, सूफी एवं संत-काव्य की विशद चर्चा की गई है। इा सन्दर्भ में इन धर्म-सम्प्रदायों की दार्शनिक एवं आध्यात्मिक भूमिका को भी साहित्य के संदर्भ में विवेचित किया गया है।

अध्याय चार में गुजरात के हिन्दी-साहित्य के विकास की क्रमिक चर्चा करते

हुए अनेक रूपों को भी स्पष्ट किया गया है। पन्द्रहवीं सदी का पूर्ववर्ती तथा गुजरात के अपभ्रंश हिन्दी-साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किये गए हैं। इनमें नरसी महेता, पद्मनाभ, भालण, भीम, मांडण, शेख बहाउद्दीन बाझन, काज़ी महमूद दरियाई, दलपतराम जैसे अनेक कवियों के रचनात्मक प्रदान को इस अध्याय में व्याख्यायित किया गया है।

सोलहवीं शताब्दी में मीराँबाई, बैजु बावरा, कृष्णदास अधिकारी, केशवदास कायस्थ, लक्ष्मीदास, ब्रेहदेव, ईसर बारोट, सायाँझूला, समर्थदास, दादूदयाल, प्रेमाबाई आदि अनेक ज्ञात एवं अज्ञात कवियों के कृतित्व की चर्चा की गई है।

इसी प्रसंग में सत्रहवीं, अठारहवीं, उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी में राजे, भगवान दास कायस्थ, पुहकर, शिवानन्द, रामचन्द्र नागर, देवरामजी, मुहम्मद आमीन, प्राणनाथ, अखा, मेकनदास, दयाराम, नृसिंहाचार्य, अर्जुन भगत, निर्मलदास, छोटम, ब्रह्मानन्द, राजा मानसिंह, गोविन्द गिल्लाभाई, पिंगल सिंह पाताभाई, रत्नो भगत, सागर महाजन, ओंकारेश्वरी, रंग अवधूत, उपेन्द्राचार्य, अविनाशानन्द जी, कुँअर कुशल, कनक कुशल, लखपति महाराव, महेरामणसिंह, इन्दुमती देसाई आदि कवियों के कृतित्व की चर्चा की गई है।

अध्याय पाँच में गुजरात की समकालीन हिन्दी कविता को केन्द्र में रखकर एक तटस्थ विवेचन प्रस्तुत किया गया है। समकालीन कवि और विशिष्ट कृतित्व को परिचयात्मक ढंग से विश्लेषित किया गया है। गुजरात के समकालीन साहित्यकारों की यदि विस्तार से चर्चा करें तो यहाँ शताधिक साहित्यकार हैं जिनके अनेक ग्रंथ मुद्रित हो चुके है। यहाँ साहित्य की अधिकांश विधाओं में लिखा गया है। कहानी, उपन्यास, शोधलेख, समीक्षा-समालोचना, ललित निबंध, संस्मरण, अनुवाद, व्याकरण, कवित्त, सवैया, दोहा, गीत, नवगीत, हाइकु, मुक्तक-काव्य, प्रबंधकाव्य, महाकाव्य, गीति नाटिका, फिल्म पटकथा आदि अधिकांश विधाओं में लिखने वाले साहित्यकार गुजरात में हैं। इनका परिचयात्मक विवरण इस अध्याय में दिया गया है।

अध्याय छह में गुजरात के हिन्दी काव्य-साहित्य की सम्यक् समीक्षा, विचारणा की गई है। इस तटस्थ समीक्षा के निकष पर इन रचनाओं को कसा गया है। इनमें मध्यकालीन वैष्णवकाव्य, संतकाव्य, जैनकाव्य, सूफीकाव्य, भक्तिकाव्य, रीतिकाव्य आदि की समालोचना प्रस्तुत की गई है। इसके कलापक्ष एवं सौन्दर्यपक्ष पर प्रकाश डाला गया है। कलापक्ष में रस, अलंकार, छन्द, भाषा की भी समीक्षा की गई है।

इसी अध्याय में गुजरात के समकालीन हिन्दी काव्य-साहित्य की साहित्यिक एवं सामाजिक अवधारणा को स्पष्ट किया गया है। आम आदमी की दयनीय स्थिति, सामाजिक

विसंगतियाँ, प्रकृति तथा नारी के विषय में विविध मंतव्य, राजनीतिक अधोपतन के प्रति आक्रोश, ईश्वरीय भक्ति आदि दृष्टिकोणों को भी स्पष्ट किया गया है। इसी अध्याय में हिन्दी काव्य नवनवोन्मेषी काव्यधाराओं को भी विश्लेषित करने का यत्न किया गया है।

अध्याय सात में सिंहावलोकन करते हुए शोध-प्रबंध का समग्र मूल्यांकन, लेखकीय स्थापनाएँ तथा उपसंहार दिया गया है। इस अध्याय में यह भी स्पष्ट किया गया है कि गुजरात का हिन्दी साहित्य इतना समृद्ध और स्तरीय रहा है कि उसकी तुलना हिन्दीभाषी क्षेत्र के साहित्य से सहज रूप में की जा सकती है और यह रंचमात्र भी कम प्रतिष्ठित नहीं है।

अन्त में परिशिष्ट में सहायक-ग्रंथों की सूची सलंग्न की गई है। इस प्रकार यह शोध-प्रबंध कुल सात अध्यायों में सम्पन्न किया गया है।

इस शोध-प्रबन्ध की पूर्णता के लिए मैं अपने शोध-निर्देशक एवं ब्रजभाषा के मर्मज्ञ विद्वान श्रद्धेय डॉ0 विष्णु चतुर्वेदी जी के प्रति श्रद्धावनत हूँ। अपने व्यस्ततम कार्यक्रम से समय निकाल कर आपने अपने गम्भीर एवं वैदुष्यपूर्ण निर्देशन से मेरा शोधकार्य सम्पन्न कराया तथा मुझे शोधकार्य से जुड़ी सामग्री सहजतापूर्वक उपलब्ध करवाई। आपने शोध सम्बन्धी सभी समस्याओं का समाधान बड़े सहज, विनम्र तथा सहयोगपूर्ण ढंग से किया, जिसके लिए मैं आपकी हृदय से आभारी हूँ।

शोधकार्य के दौरान आपकी अर्द्धांगिनी- डॉ0(श्रीमती) ब्रजबाला चतुर्वेदी जी से मिले स्वागत-सत्कार युक्त सरल, निश्छल स्नेह एवं ममतामयी माँ के दुलार की हमेशा आभारी रहूँगी।

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ0 अनुराधा दलाल (रीडर), प्रो0 पारुकान्त देसाई, डॉ0 शैलजा भारद्वाज (रीडर), डॉ0 भगवानदास कहार तथा अन्य सभी प्रोफेसरों के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने समय-समय पर मुझे उत्साहित करके अनुपम निर्देश एवं उचित जानकारियाँ प्रदान कीं।

प्रसिद्ध हाइकुकार डॉ0 भगवतशरण अग्रवाल जी के प्रति भी मैं अपना विशेष आभार व्यक्त करना चाहूँगी जिन्होंने अपनी व्यस्त दिनचर्या में से समय निकाल कर मुझे शोध से जुड़ी सामग्री तथा अपने अमूल्य सुझाव दिये।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के प्रोफेसर डॉ0 नरेश मिश्रजी, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, डॉ0 बैजनाथ सिंहल, डॉ0 रोहिणी अग्रवाल, डॉ0 रामसजन पाण्डेय जी के प्रति भी मैं आभार प्रदर्शित करती हूँ जिनके सानिध्य में मेरी साहित्यिक अभिरुचि का विस्तार

हुआ। साथ ही महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जिन्दल जी के व्यक्तिगत सहयोग के लिए आभारी रहूँगी।

मेरी माताजी पूजनीय डॉ0(श्रीमती) लीलावती छाजेड़, जो स्वयं हिन्दी की प्राख्याता हैं, ने कदम-कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया तथा किसी भी प्रकार की मानसिक उलझन होने पर उसका निराकरण किया। मेरे पूज्य पिताजी डॉ0 सी.एस. छाजेड़ का स्नेह-आशीर्वाद मेरा सम्बल बना। इन दोनों का सहज स्नेह एवं उनका सहयोग मैं कभी विस्मृत नहीं कर पाऊँगी। मेरी नन्हीं-सी बेटी के लालन-पालन का दायित्व उन दोनों का रहा। उन्होंने अपनी दोहित्री को प्राणों से लगाकर मुझे निश्चिन्त हो शोधकार्य करने के लिए आश्वस्त कर दिया। साथ ही मेरी प्रिय अग्रजा डॉ0(श्रीमती) अंजु मांडावत, जो शोध प्रबन्ध की पूर्णता के लिए मुझे उत्साहपूर्वक अमूल्य सहयोग देती रही- का स्नेह प्रेरणा का आधार बना।

साथ ही अपने जीवन साथी श्री संजय भण्डारी, जिन्हें मेरे अध्ययन-लेखन आदि में व्यस्त रहने के कारण असुविधाएँ हुई-उसके लिए मैं क्षमा-प्रार्थी हूँ। और मेरी नादान पुत्री -हिया-जो सदैव मेरे कागज-पन्नों व पुस्तकों को पलटकर देखती थी कि मैं क्या पढ़ रही हूँ? अध्ययन-लेखन के समय सबको मम्मी को पढ़ने में सहयोग देने और 'चुप रहो, मम्मी पढ़ रही है।' -की हिदायत देती रही - के लिए मैं जीवन पर्यन्त आभारी रहूँगी। उसके प्रति वात्सल्य और समय में हुई कटौती मेरे लिए कष्टदायी है, इस शोध-प्रबन्ध की पूर्णता पर अगाध वात्सल्य प्रकट करती हूँ।

Jyoti

ज्योति छाजेड़
शोधार्थी